



वर्ष- 4

अंक- 19

जनवरी से मार्च 2013

संरक्षक

डॉ. व्ही. एस. तोमर

कुलपति, ज.ने.कृ.वि.वि. जबलपुर

मार्गदर्शक

डॉ. के. के. सक्सेना

संचालक विस्तार सेवायें
ज.ने.कृ.वि.वि. जबलपुर

डॉ. आर.के. पाठक

अधिष्ठाता, कृषि महाविद्यालय
टीकमगढ़

डॉ. अनुपम मिश्रा

आंचलिक परियोजना संचालक,
आंचलिक ईकाई-VII
भा.कृ.अ.परि., जबलपुर

मुख्य सम्पादक-

डॉ. शैलेन्द्र सिंह गौतम

प्रभारी कार्यक्रम समन्वयक
विशेषज्ञ (उद्यानिकी)

सम्पादक मण्डल

डॉ. आर.के. प्रजापति

विशेषज्ञ (पौध संरक्षण)

श्री बी.एल. साहू

विशेषज्ञ (गृह विज्ञान)

डॉ. संदीप खरे

विशेषज्ञ (पशुपालन)

डॉ. आर.के. छिवेदी

कार्यक्रम सहायक (सर्स्य विज्ञान)

श्री नितेन्द्रसिंह यादव

वरिष्ठ अनुसंधान सहायक (निकरा)

श्री डालेश्वर गौतम

वरिष्ठ अनुसंधान सहायक (निकरा)

प्रकाशक :

कृषि विज्ञान केन्द्र, टीकमगढ़ (म.प्र.)

सम्पर्क-

फोन : 07683-244934 (ऑ.)

फैक्स : 07683-245034

ई-मेल : kvktikamgarh@rediffmail.com



॥ दो शब्द ॥

कृषि विज्ञान केन्द्र टीकमगढ़ त्रिमासिक कृषि पत्रिका का प्रकाशन करता आ रहा है। इसमें किसान भाई आगामी तीन माह में कौन-कौन सी (खेती, उद्यानिकी, पशुपालन) तकनीक अपनायें जिससे उत्पादन एवं उत्पादकता में वृद्धि की जा सके का समावेश किया जाता है। इसी क्रम में जनवरी से मार्च 2013 तक इस पत्रिका में प्रकाशित की जा रही है। मुझे आशा ही नहीं बल्कि पूर्ण विश्वास है कि इन तकनीकियों को अपनाकर किसान भाई कृषि उपज में वृद्धि कर सकेंगे। मैं कृषि विज्ञान केन्द्र के समर्त वैज्ञानिकों को जवाहर कृषि संदेश प्रकाशन पर नये वर्ष की शुभकामनाओं के साथ प्रकाशन पर धन्यवाद देता हूँ।

डॉ. आर.के. पाठक

अधिष्ठाता कृषि महाविद्यालय, टीकमगढ़

सफलता की कहानी प्राकृतिक संसाधन प्रबन्धन-गोबर गैस

कृषि विज्ञान केन्द्र, टीकमगढ़ द्वारा विगत वर्ष 2010 से ही जलवायु समुद्यानशील कृषि पर राष्ट्रीय पहल परियोजना द्वारा टीकमगढ़ विकास खण्ड के गाँव काँटी को अंग्रीकृत किया गया है। परियोजना अन्तर्गत गांव में पशुओं की उपलब्धता को देखते हुये पशुओं द्वारा प्राप्त गोबर का सही तरीके से प्रबन्धन के उपायों में गोबर गैस संयंत्र हेतु रु.13500/- की अनुदान राशि केन्द्रीय एवं राज्य सरकार के साथ इक्फो जिला इकाई द्वारा प्रदान करवायी गई। वही कृषकों को गोबर गैस संयंत्र लगवाने के लिये केन्द्र के वैज्ञानिकों ने प्रशिक्षण के माध्यम से अवगत कराया। वर्तमान में 64 गोबर गैस सफलता पूर्वक ग्राम में कार्यरत है जबकि इस वर्ष के अन्त तक यह संख्या 100 से ऊपर पहुँचाने का लक्ष्य केन्द्र द्वारा निर्धारित है। गाँव के 64 कृषक परिवार की महिलायें जो गोबर गैस से खाना पका रही हैं वो स्वास्थ्य की दृष्टि से आँखों की बीमारियों में 28.57 प्रतिशत, कफ 27.78. प्रतिशत, सिर दर्द 33.08 प्रतिशत, श्वसान 18.08 प्रतिशत से सुरक्षित हैं जबकि इसके अतिरिक्त भोजन बनाने में लकड़ी का उपयोग कम होने से वृक्ष काटन में भी कमी आई है। गोबर गैस से प्राप्त होने वाली खाद (सैलरी) का उपयोग सब्जी उत्पादन में करने से उत्पादन भी अच्छा हुआ है। एक संयंत्र से प्रतिदिन 3 घन मी. गोबर गैस प्राप्त होती है। एक गोबर गैस में औसत 25 कि.ग्रा. गोबर सैलरी प्राप्त होती है। सैलरी के उपयोग से 25 प्रति. रसायनिक खाद का उपयोग कम हुआ है। गोबर गैस प्रकृति संसाधन के समुचित उपयोग का एक तरीका है।



अपना मोबाइल नम्बर लिखवायें, घर बैठे कृषि की नई जानकारी एवं समस्याओं का समाधान पायें। सम्पर्क सूत्र- 07683-244934

रबी फसलों में पौध संरक्षण

चना-

- (1) चने में इल्ली फली भेदक के प्रबंधन के लिये परिभक्षी चिड़ियों को आकर्षित करने के लिये लगभग 50 लकड़ियों की टी (T) आकार की खपाचियाँ प्रति हैक्टेयर की दर से बना कर चने की फसल की ऊँचाई से 10-20 से.मी. अधिक ऊँचाई में लगाये ।
- (2) चने में इल्ली रसायनिक प्रबंधन हेतु विवानाल फॉस 2 मि.ली. दवा प्रति लीटर पानी में मिलाकर छिड़काव करें । यदि इल्ली फली बनाने के समय दिखाई दे तो इण्डोवर्सीकार्व नामक दवा 7 मि.ली./15 लीटर पानी में मिलाकर छिड़काव करें ।
- (3) चने की खड़ी फसल में खरपतवार नियंत्रण खुरपी अथवा हैण्ड हो से करें जिससे फसल में नमी सरंक्षित होगी ।
- (4) फसलों को पाले से बचाने हेतु खेत के चारों तरफ धुआँ करें अथवा सिंचाई करके नमी बनाये रखें ।

सरसों-

- (1) माहू कीट प्रबन्धन हेतु- डेमेक्रोन (फास्कोमिडान) 300 मि.ली. या डाइमिथिएट 100 मि.ली. 600 लीटर पानी में मिलाकर छिड़काव करें एवं दूसरा छिड़काव पहले छिड़काव के 15 दिन बाद करें ।
- (2) चूर्णिला फफूंदी प्रबन्धन हेतु- सल्फैक्स (सल्फर 80 डब्ल्यू.पी.) की 3 मि.ली. मात्रा/लीटर पानी में मिलाकर 2-3 छिड़काव 15 दिन के अन्तर पर करें ।

गेहूँ-

- (1) गेहूँ में गरुआ रोग से प्रभावित पालियों पर नारंगी भूरे रंग के धब्बे या पीले रंग के धब्बे उभर आते हैं । जिनेब दवा 2 मि.ली. प्रति लीटर पानी

में मिलाकर छिड़काव करें ।

- (2) गेहूँ में कंडवा रोग प्रभावित पौधों की बालियाँ पहले निकल आती हैं । इन पर काला चूर्ण भर जाता है । रोगग्रस्त पौधों को उखाड़ कर जला देना चाहिये । बीज बोने से पहले बीटावेक्स 2.5 ग्राम प्रति कि.ग्रा. बीज की दर से उपचार कर के बोना चाहिये ।
- (3) गेहूँ की खड़ी फसल में दीमक का प्रकोप होने पर क्लोरोपोइरीफास 20 ई.सी. 1.25 लीटर दवा प्रति हैक्टेयर की दर से दवा को सिंचाई के पानी के साथ दें । असिंचित दशा में उपरोक्त दवा की मात्रा 3 लीटर पानी में घोलकर 50 कि.ग्रा. रेत में मिलाकर खेत में फैलाकर पानी लगायें ।

सब्जियाँ-

सब्जियों में रस चूसने वाले कीटों के लिये मेटासिस्टोक्स दवा 2 मि.ली. प्रति लीटर पानी एवं फल भेदक इल्लीयों के लिये मेलाथियान 1 मि.ली. दवा प्रति लीटर पानी में मिलाकर फसल पर 15 दिन के अन्तर पर छिड़काव करें । तथा सब्जियों का उपयोग दवा छिड़काव से एक सप्ताह तक न करें ।

मूँग (ग्रीष्मकालीन)-

पीला चितकबरा (मोजेक) रोग सफेद मक्खी के द्वारा फैलाता है जो एक विषाणु जनत रोग है । इसमें पत्तियाँ पीली पड़ जाती हैं । प्रबन्धन हेतु मेटासिस्टोक्स या डाइमोथिएट दवा की 30 मि.ली. मात्रा प्रति टंकी (15 लीटर) पानी में घोल कर 15 दिन के अन्तराल पर छिड़काव करें ।

ग्रीष्मकालीन मूँग की खेती कैसे करें ?

खेत की तैयारी- रबी फसल कटने के उपरांत सिंचाई करें । खेत ओट में आने पर 2-3 बार देशी हल से जुताई कर पाटा लगाकर भूमि समतल करें ।

बौनी का समय- मध्य मार्च से मध्य अप्रैल तक उत्तम समय है ।

बीज की मात्रा- 25 कि.ग्रा./हैक्टर,

बीज उपचार- बेबिस्टीन 2 ग्राम प्रति किलो बीज व थामो मेथाक्साम 1 ग्राम प्रति किलो बीज की दर से उपचारित करने से पौधे स्वस्थ निकलते हैं ।

उन्नत किस्में- के-851, पूसा-16, पी.डी.एम. 139, पंत मूँग 1, पूसा वैसाखी एम.यू.एम.-1

बोने का तरीका- कतार से कतार की दूरी 30 से.मी. व पौधे से पौधे की दूरी 10 से.मी. रखें ।

खाद व उर्वरक- 20:60:20 नत्रजन, फास्फोरस, पोटाश प्रति हैक्टर अर्थात्

लगभग 100 कि.ग्रा. डी.ए.पी हैक्टर पर्याप्त होता है । उर्वरक बीज से 5-7 से.मी. गहराई में डालना चाहिए ।

सिंचाई प्रबंधन- गर्मी की फसल में लगभग 10-15 दिन में एक बार सिंचाई करना जरुरी होता है ।

खरपतवार प्रबंधन- बोनी पूर्व पेन्डीमेथलिन 50 ई.सी. 1 लीटर सक्रिय तत्व /हैक्टर की दर से छिड़कने से अधिकतर खरपतवार नियंत्रित होते हैं । पहली निदाई बोने के 20-25 दिन में करना जरुरी होता है ।

रोग नियंत्रण- पीला मोजेक के लिए उपरोक्त ढग से बीज उपचार करने पर नियंत्रित रहता है । रोग रोधी किस्में चयन करने से इस रोग से बचाव होता है ।

उपज- उपरोक्त ढग से खेती करने पर किसान लगभग 12-15 विव. प्रति हैक्टर उत्पादन अर्जित कर सकता ।



अनाज भण्डारण

भारत एक कृषि प्रधान देश है इसकी बढ़ती आबादी के लिये खाद्यान्न पैदावार की वृद्धि के साथ ही साथ उसकी गुणवत्ता तथा मात्रा को उसी रूप में बनाए रखने की आवश्यकता किसानों तथा व्यापारियों दोनों को है । अनाज की बवत अनाज के गुणवत्ता की ओर विशेष ध्यान ना देने के कारण खाद्यान्नों को बहुत अधिक मात्रा में नुकसान हो रहा है । कृषक भाई इस प्रकार के नुकसान को कम महत्व देते हुए प्रायः उपलब्ध करना हमारा दायित्व है । आधुनिक भण्डारण पात्रों में नमी व चूहों से अनाज को रोगाण रहित में भण्डारित किया सकता है ।

सुरक्षित अनाज भण्डारण के सिद्धांत-अनाज को भण्डार से पूर्ण अच्छी तरह सुखा लें जिसमें नमी की मात्रा 10 प्रतिशत से अधिक न हो । अनाज से भरे बौरों को लकड़ी की पट्टियों पर रखें जिससे नमी अथवा सीलन से बोरे प्रभावित न हो । जहां तक संभव हो सके धातु भण्डारण पात्रों का ही प्रयोग करें । कीड़ों से नुकसान को समाप्त करने के लिए धूप्र एल्यूमीनियम फास्फाइड या जिंक फास्फाइड दवा आदे में मिलाकर रख दें । दालों पर सरसों के तेल का लेप करके भण्डारण करने पर भी धुन से बचाया जा सकता है । जिस भण्डारण पात्र में अनाज भण्डारण करना हो उसके नीचे व ऊपर नीम की पत्तियां बिछा दें । भण्डारित अनाज के नुकसान में कीड़ों के समान ही चूहों का भी योगदान होता है । चूहे न केवल भण्डारित अनाज को खाते ही नहीं अपुति बर्बाद भी करते हैं । एक चूहा अपने मलमूत्र से खाने के 10 गुना तक अनाज नष्ट करते हैं ।

चूहा रोकथाम के उपाय- भण्डारण पात्रों को चूहा रोधी बनाकर । चूहों को चूहेदानी की सहायता से पकड़कर । जहरीले चारे जैसे जिंक फास्फाइड का उपयोग कर चूहों का नियंत्रण कर सकते हैं ।

कीट वर्ग- भण्डार में विभिन्न कीट भी अनाज को क्षति पहुंचाते हैं । अनाज के शत्रु हमारे कुल उत्पादन का लगभग 9-10 प्रतिशत प्रति वर्ष नष्ट कर देते हैं । भण्डार ग्रह की अनूकूलता व परिस्थितियां इन कीटों की संख्या व प्रकोप को प्रभावित करती हैं ।

भण्डारित अनाज में नमी की मात्रा सुरक्षित भण्डारण के लिए अनाज में

अधिकतम 10 प्रतिशत या इससे कम नहीं होना चाहिए । ऐसा होने पर बीजावरण में कठोरता बनी रहती है जिससे कीट व अन्य सूक्ष्म जीवाणु अपने उद्देश्य में सफल नहीं हो पाते हैं ।

खपरा बीटल (भूंग)- यह गेहूं के साथ-साथ सभी अनाजों, दलहनों व तिलहनों को नुकसान पहुंचाता है । इसकी इल्ली दाने के अन्दर व सतह दोनों को नुकसान पहुंचाती है ।

अनाज छेदक- इसकी इल्ली तथा वयस्क अनाज को नष्ट कर चूर्ण (दुर्गन्धयुक्त) बना देते हैं ।

अनाज का धुन- यह अनाज के साथ अनाज उत्पादों दोनों को खाता है जबकि इल्ली दानों को खोखला कर देती है ।

टारा भूंग- इसकी इल्ली व वयस्क दोनों ही गेहूं, मक्का, ज्वार, मैंदा, सूजी को क्षति पहुंचाते हैं ।

अनाज का पंतगा- इसकी इल्ली अनाज को खराब कर देती है तथा इसकी विशेषता है कि नुकसान पहुंचाए अनाज के गुच्छे बन जाते हैं ।

दाल की बीटल (भूंग)- यह दलहनों को नुकसान पहुंचाती है । यह खेत से ही क्रियाशील हो जाती है ।

गोदाम का पंतगा- यह खेत में ही सक्रिय हो जाता है । भण्डारण ग्रह में इसकी इल्ली दानों को खाकर अन्दर ही अन्दर खोखला कर देती है ।

कीट वर्ग के रोकथाम से उपाय- भण्डारण के अच्छे उपायों का पालन करने के साथ साथ भण्डारण के पूर्व भण्डार गृह, पात्रों तथा बौरों पर मैलाधियान 50 ईसी घोल का 1:100 बनाकर छिड़काव करें ।

नियंत्रण- प्रायः धूप्र कीटनाशक जैसे ई.डी.वी. एल्यूमीनियम फॉस्फाइड का प्रयोग कीट नियंत्रण में किया जाता है । इसका उपयोग 3 मि.ली. प्रति 100 किलो अनाज पर प्रभावी होता है । एल्यूमीनियम फॉस्फाइड की 2 ग्राम की 1-2 गोली एक टन अनाज के प्रधुमन के लिए प्रभावी होती है ।

पशुओं में खुरपक्का मुँहपक्का (एफ.एम.डी.)

(1) रोग क्या है-

खुरपक्का या मुँह पक्का रोग एक विषाणु जनित रोग है, जो जुगाली करने वाले पालतु एवं वन्य पशुओं और शूकरों में होता है । यह अति संक्रामक और छूत वाला रोग है, जिसमें पशु के मुँहखुरी, खुरचपक्का, बैगा रोग के नाम से जाना जाता है । इस विषाणु की 4 मुख्य टाईप होती है । ओ, ए, सी, एशिया-1 जो सारे देश में इस बीमारी का कारण है । यह रोग गौ वंशीय, भैंस वंशीय, भेड़ एवं सुअरों में फैलता है । रोग ग्रसित सुअरों में मृत्युदर अत्याधिक है । अन्य पशुओं की कार्य क्षमता प्रभावित होती है । यह रोग बसंत तथा वर्षा ऋतु में अधिक होता है । यह एक छूत का रोग है । अतः रोगग्रस्त पशु के संपर्क में स्वस्थ पशु आने से उसे यह रोग हो जाता है ।

(2) रोग के लक्षण-

1. बुखार आना, खाना-पीना जुगाली बन्द करना ।
2. मुँह में छाले आना एवं लार बहना ।
3. खुर के बीच में दाने तथा छाले पड़ जाते हैं, पशु लंगड़ाने लगता है ।
4. बीमार पशु के थन में छाले पड़ जाते हैं तथा धाव बन जाता है, पशु का दूध कम हो जाता है ।
5. पशु बहुत दुर्बल हो जाता है । सामान्यतः रोग 2 सप्ताह तक चलता है ।

(3) रोग उपचार-

1. मुँह के छालों को किसी अच्छे एन्टीसेप्टिक से धोना चाहिये जैसे -पोटाश,

फिटकरी, बोरिक एसिड अथवा मुँह के छालों पर बारोग्लिसरीन का लेप किया जा सकता है । उपरोक्त औषधियां प्राप्त ना होने की स्थिति में नीम की पत्तियों को उबालकर उसके पानी से मुँह एवं खुर धोये जावें ।

2. पैर की छालों को पानी से साफ कर, फिनाईल अथवा बीटाडीन के घोल में कई बार धोना चाहिये । खुर के बीच के धावों पर एन्टीसेप्टिक पावडर छिड़काव किया जाना चाहिये ।

3. थन में रोग होने पर थन से दूध निकालकर थनों को बोरिक एसिड से धोना चाहिये तथा छालों पर एन्टीसेप्टिक मरहम लगाना चाहिये ।

4. पशु चिकित्सक सहायक शल्यज्ञ से संपर्क स्थापित कर एन्टीबायोटिक के इन्जेक्शन लगवाना चाहिये ।

(4) रोकथाम के उपाय-

1. पशु को रोग से बचाने हेतु सबसे उत्तम साधन है, पशु का इस बीमारी से प्रतिबंधात्मक टीकाकरण कराना । इस हेतु अपने समीपस्थ पशु चिकित्सालय से संपर्क कर सभी पशुओं को इस रोग का प्रतिबंधात्मक टीकाकरण कराना चाहिये । टीकाकरण में प्राथमिकता दुधारु /संकर पशुओं, बैलों को दिया जाना चाहिये । यह टीका पशु चिकित्सा विभाग द्वारा 50 प्रतिशत अनुदान पर लगाया जाता है । इस टीके को 6 माह उप्र के बछड़ा/बछिया, पाड़ी को लगवाना चाहिये ।

2. रोगी पशु को स्वस्थ पशु से अलग रखना चाहिये ।

3. महामारी के समय पशु को इधर-उधर रखना चाहिये ।

भिण्डी की उन्नत खेती

भूमि- अच्छे जल निकास वाली एवं कार्बनिक पदार्थ युक्त दोमट भूमि उपयुक्त होती है।

उन्नत किस्में- वीआरओ 6, पूसा मखमली पूसा सावनी, पूसा सलेक्सन 1, 2, 3

बौने का समय- ग्रीष्म ऋतु की फसल- जनवरी से मार्च

वर्षा ऋतु की फसल- जून से जुलाई।

बीज की मात्रा- ग्रीष्म ऋतु- 18-20 किलो बीज/हैक्टेयर।

वर्षा ऋतु- 10-12 किलो बीज प्रति हैक्टेयर।

बीजोपचार- थायरम 3 ग्राम दवा प्रति किलो ग्राम बीज के हिसाब से उपचारित करें।

बौने की दूरी- ग्रीष्म ऋतु- 30X30 से.मी (पौधXलाइन)

वर्षा ऋतु - 45X45 (पौधXलाइन)

भिण्डी की अच्छी फसल के लिये 30 टन गोबर की सड़ी हुई खाद बौने के 2 सप्ताह पहले मिट्टी में अच्छी तरह मिला देना चाहिये। इसके बाद 300 किलो अमोनियम सल्फेट, 350 किलो सुपर फार्सेट तथा 125 किलो म्यूरेट ऑफ पोटाश बुबाई से पहले कूट में देना चाहिये। एक महीने बाद 300 किलो अमोनियम सल्फेट की ट्राप ड्रेसिंग करें।

सिंचाई- बौने के समय यदि नमी की कमी हो तो एक हल्की सिंचाई करके बोबाई करनी चाहिये। इसके बाद गर्मियों में एक सप्ताह के अन्तर पर तथा वर्षा में जब पानी की आवश्यकता हो सिंचाई करें।

खरपतवार नियंत्रण एवं अंतःक्रियायें- ग्रीष्म ऋतु की फसल में 3-4 गुडाई तथा वर्षा की फसल में 2-3 गुडाई करें। वर्षा की फसल में 2-3 गुडाई करें वर्षा की फसल में मिट्टी भी चढ़ायें।

तोड़ाई- भिण्डी की प्रथम फली बनने के बाद प्रत्येक दूसरे तीसरे दिन फलियों की तुड़ाई करते रहना चाहिये। तुड़ाई का सबसे अच्छा समय फूल खिलने के 6-7 दिन बाद होता है।

पैदावार- 50-80 कुण्डल /हैक्टेयर

कीट प्रबंधन-

भिण्डी तना छेदक- रोकथाम मेलाथियान 50 ईसी. का 1.5 प्रतिशत घोल का छिड़काव करें।

जेसिड- यह पत्तियों का रस चूस लेते हैं जिससे पत्तियां सिकुड़ जाती हैं।

रोकथाम- इण्डोसल्फान 35 ईसी. का 0.05 प्रतिशत घोल का छिड़काव करें।

आम में खाद एवं उर्वरक प्रबंधन-

एक वर्ष के पौधे के लिये (प्रति पौधा)- गोबर की खाद- 10 कि.ग्रा. नाइट्रोजन 100 ग्राम, फार्सेट-75 ग्राम, पोटास-100 ग्राम एक वर्ष के बाद पौधे को दी जाने वाली खाद की मात्रा एक वर्ष के पौधे को दी जाने वाली मात्रा की आयु से गुणा करके देते हैं जैसे 2 वर्ष के पौधे के लिये गोबर की खाद $10 \times 2 = 20$ कि.ग्रा. नाइट्रोजन $100 \times 2 = 200$ ग्राम, फार्सेट $75 \times 2 = 150$ ग्राम तथा पोटाश $100 \times 2 = 200$ ग्राम, देनी चाहिये। खाद की मात्रा 10 वर्ष तक इसी प्रकार देते हैं। फिर पौधे को 10 वर्ष की आयु वाले पौधे के समान ही खाद देते हैं। स्त्रे के रूप में-प्रति वर्ष जिंक सल्फेट तथा कॉपर सल्फेट के 0.2 प्रति सान्द्रता के घोल का पत्तियों पर छिड़काव करें। सुहागा 0.01 प्रति सान्द्रता के घोल का पत्तियों पर दो बार छिड़काव करना चाहिये।

आम में कीट नियंत्रण- आम का भुनगा (मैंगो हॉपर) यह एक छोटा फुदकने वाले मटमेले रंग का कीट होता है। इस कीट का निष्फ तथा वयस्क पत्तियों और बौरा (फूल) का रस चूसता है। जिससे फल कम बनते हैं।

रोकथाम- तीन छिड़काव मेलाथियान (0.15 प्रतिशत) या मोनोकोटोफास 0.04 प्रतिशत (1 मि.ली. न्यूवेक्रान प्रति लीटर पानी में) पहला फूल आने की प्रारम्भिक अवस्था, दूसरा फल मटर के आकार के हो, तीसरा छिड़काव दूसरे छिड़काव के 15 दिन बाद।

चेतावनी- इस बात का ध्यान अवश्य रखें कि जब फूल अपनी खिलने की पूर्ण अवस्था पर हो तब दवाओं का छिड़काव न करें। आम का मूँगा (मैंगो मिली बग) इस कीट को चेपा या गुज़िया भी कहते हैं इसकी मादा पंखहीन होती है यह सफेद रंग चपटी होती है। इसको दवाने पर इसमें से पीले रंग का पदार्थ निकलता है। इस कीट की मादा पेड़ पर चढ़कर फलों का रस चूसती है। तथा डण्ठल कमजोर कर देती है जिससे फल टूटने लगते हैं।

रोकथाम- पेड़ के तना के ऊपर 30-35 से.मी. ऊँचाई पर 25 से.मी. चौड़ी पॉलीथिन की पन्नी चारों ओर लपेटकर अच्छी तरह से बांध देनी चाहिये। तथा पन्नी के ऊपर अरण्डी के तेल और रेजिन का लेप कर देना चाहिये तथा पन्नी के नीचे पेड़ पर चारों ओर 10 से.मी. चौड़ी ग्रीस की पट्टी पोत देनी चाहिये। ऐसा करने से यह कीट पेड़ पर नहीं चढ़ पाता है यदि पौधे प्रभावित होने लगे तो न्यूवेक्रान की 0.04 प्रति. छिड़काव प्रभावकारी रहता है।

कृषि विज्ञान केन्द्र टीकमगढ़ के वैज्ञानिक/कर्मचारियों का परिचय :



डा. कीशन सिंह गौराम
प्रभारी कार्यक्रम समन्वयक
(उद्योगिकी)



श्री बल्ली लाली साहू
विषय वस्तु विशेषज्ञ
(गुरु विज्ञान)



डा. राकेश कुमार प्रसाद
विषय वस्तु विशेषज्ञ
(पौध सरकारी)



डा. संजीव कुमार श्याम
विषय वस्तु विशेषज्ञ
(पौध पालन)



डा. आर. कुमार
कार्यक्रम समन्वयक
(सर्व विज्ञान)



श्री कुमारल लिटोरिया
(वाहन वालक)



श्री भगत सिंह चहार
(वाहन वालक)



श्री ऐश्वर हेडे जीन
(संवेश वालक)



श्री नितेंद्रसिंह यादव
वरिष्ठ अनुसंधान सहायक
(निकरा)



श्री आक्षवर सिंह
वरिष्ठ अनुसंधान सहायक
(निकरा)



अपना मोबाइल नम्बर लिखवायें, घर बैठे कृषि की नई जानकारी एवं समस्याओं का समाधान पायें। सम्पर्क सूत्र- 07683-244934

प्रति,

बुक-पोस्ट

प्रेषक :-

कार्यक्रम समन्वयक

कृषि विज्ञान केन्द्र, टीकमगढ़

टीकमगढ़ (म.प्र.) - 472001

दूरभाष-07683-244934